मादक पदार्थों की होली से क्या अपनी नाकामी छिपा पाएंगे म्यांमार के सैनिक शासक

यंगून।

म्यांमार के शान प्रांत में सोमवार को एक अजीब उत्सव मनाया गया। वहां बड़े पैमाने पर अफीम और अन्य मादक पदार्थों की होली जलाई गई। यह आयोजन विश्व मादक पदार्थ विरोधी दिवस के मौके पर किया गया। शान प्रांत को म्यांमार में मादक पदार्थों की पैदावार के लिए जाना जाता है। पिछले कुछ समय से वहां नशीली दवाओं के उत्पादकों और तस्करों के खिलाफ कार्रवाई का अभियान छेड़ा गया है। म्यांमार के सैनिक शासकों का दावा है कि उनके इस अभियान को बड़ी सफलता मिली है। सेना स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन काउंसिल (एसएसी) नाम से देश का शासन चला रही है। उसने दावा किया है कि एसएसी ने मादक पदार्थों के खिलाफ कार्रवाई के लिए अपनी अंतरराष्ट्रीय वचनबद्धता को पूरा किया है और आगे भी इसमें सहयोग करती रहेगी। लेकिन कई पर्यवेक्षकों की राय है कि एसएसी ने इस बारे में अपनी सफलता को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया है। उसी कोशिश में सोमवार को शान प्रांत में पकड़ी गई अफीम की होली जलाई गई। धधकती लपटों के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल किए गए। जबकि पर्यवेक्षकों का आरोप है कि बरामद हुए मादक पदार्थों के बारे में एसएसी ने फर्जी आंकड़े पेश किए हैं। म्यांमार में मादक पदार्थों के खिलाफ कार्रवाई की जिम्मेदारी सेंट्रल कमेटी फॉर ड्रग एब्यूज कंट्रोल (सीसीडीएसी) की है। यह एजेंसी गृह मंत्रालय के तहत आती है। इसी एजेंसी ने बरामद हुए मादक पदार्थों के बारे में सूचना जारी की है। इसमें अफीम, हेरोइन, स्टीमुलेंट टैबलेट्स, क्रिस्टल मेथम्फैटेमाइन, गांजा, क्रेटॉम आदि पदार्थ शामिल हैं। एजेंसी का दावा है कि 2021 में उसने 46 करोड़ 20 लाख अमेरिकी डॉलर कीमत के मादक पदार्थ पकड़े। 2022 में यह बरामदगी 53 करोड़ 30 लाख डॉलर की रही। इस वर्ष मई तक लगभग 18 करोड़ डॉलर के मादक पदार्थ जब्त कर लिए गए थे। लेकिन संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट पर गौर करें, तो म्यांमार सरकार के दावों पर गंभीर सवाल उठते हैं। इस रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया कि म्यांमार में 2022 में अफीम की खेती में 33 फीसदी की बढ़ोतरी हुई।

न्यूज ब्रीफ

पाकिस्तान में एक ही फैमिली के 9 लोगों का कत्ल: शादी को लेकर विवाद हुआ था, मरने वालों में बच्चे भी शामिल

पेशावर। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा राज्य में मंगलवार रात एक ही परिवार के 9 लोगों की हत्या कर दी गई। मरने वालों में कुछ बच्चे भी शामिल हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक- यह मामला एक शादी को लेकर हुए विवाद से जुड़ा है। कातिल एक ही था और इस वक्त फरार है। यह घटना मालकंद जिले की बेटखेला तहसील के बागर डेरा इलाके में हुई। इलाके में काफी तनाव है। इसको देखते हुए बाहरी लोगों की आवाजाही पर रोक लगा दी गई है। मीडिया कवरेज पर भी रोक है। खैबर पख्तूनख्वा से जारी लोकल मीडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक- यह मामला दो परिवारों के बीच एक शादी के विवाद से जुड़ा है। मंगलवार रात यह विवाद काफी बढ़ गया था और कुछ लोगों के दखल के बाद दोनों पक्ष घर लौट गए थे। देर रात एक परिवार का सदस्य राइफल लेकर दूसरे परिवार के घर में घुसा। उस वक्त वहां मौजूद सभी लोग गहरी नींद में थे। इसी दौरान हमलावर ने फायरिंग शुरू की। उसने दो कमरों में सो रहे कुल 9 लोगों को मार डाला। मारे जाने वालों में 6 महिलाएं और 3 पुरुष हैं। इनमें बच्चे भी शामिल हैं, हालांकि उनकी पहचान उजागर नहीं की गई है। बेटखेला के एक पुलिस अफसर ने घटना की पुष्टि की। कहा- यह मामला दो परिवारों के विवाद का है। कुछ खबरों के मुताबिक- आरोपी को उकसाया था। इसके बाद उसने इस हत्याकांड को अंजाम दिया। पुलिस ने अब तक आरोपी का नाम नहीं बताया है। वो फरार है। घटना के बाद इलाके के लोग पहले हॉस्पिटल और बाद में पुलिस स्टेशन पहुंचे और विरोध प्रदर्शन किया। इन लोगों ने मृतकों के शव रोड पर रखकर ट्रैफिक जाम भी कर दिया। बाद में पुलिस ने उन्हें हटाया।

रूस ने छोड़ा तो अमेरिका ने वैगनर पर की कार्रवाई, वित्त पोषित करने वाली अफ्रीकी खदानों पर लगाया प्रतिबंध

वाशिंगटन। वैगनर ग्रुप पिछले दिनों रूस से विद्रोह करके काफी चर्चा में रहा। हालांकि, पुतिन ने वैगनर समूह के मुखिया येवगेनी प्रिगोझिन को छोड़ दिया हो लेकिन अमेरिका ने उस बड़ी कार्रवाई की है। अमेरिका ने मंगलवार को वैगनर ग्रुप को धन मुहैया कराने वाली अवैध सोने की अफ्रीकी खदानों पर प्रतिबंध लगा दिया। इसी के साथ येवगेनी प्रिगोझिन से जुड़ी कंपनियों पर प्रतिबंध लगाया है। इन प्रतिबंधों का पिछले हफ्ते रूस के साथ हुए वैगनर के विद्रोह के साथ कोई संबंध नहीं है। अमेरिका ने पहले भी प्रिगोझिन और वैगनर समूह के खिलाफ कई बार प्रतिबंध जारी किए थे जिसमें यह आरोप भी शामिल है कि उन्होंने 2016 के अमेरिकी चुनाव में हस्तक्षेप करने की कोशिश की थी। लेकिन रूस ने बीच में आकर इसका पक्ष लिया था। वहीं इससे पहले अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने इस संबंध में बताया कि वैगनर के प्रमुख प्रिगोझिन ने पूर्व में जिस तरह कृत्य के किए हैं, उनके लिए उस पर अमेरिका में कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। उन्होंने कहा, हम चाहते हैं कि उसने कथित तौर पर जिस तरह के अपराध किए हैं, उनके लिए उस पर मुकदमा चले और हम उसे कटघरे में खड़ा देखना चाहते हैं। बता दें कि रूस छोड़ने के बाद बेलारूस के राष्ट्रपति एलेकजेंडर लुकाशेंको ने वैगनर प्रमुख का अपने देश में स्वागत किया है।

हत्या के आरोप में मौत की सजा सुनाए जाने पर भड़का आरोपी, कोर्ट में ही वकील को जड़ा घूंसा

वाशिंगटन। अमेरिका में मौत की सजा सुनाए जाने पर एक आरोपी इतना भड़क गया कि उसने अदालत में ही वकील को घूंसा जड़ दिया। आरोपी फ्लोरिडा का रहने वाला है जिसको 1990 में एक 11 वर्षीय लड़की और उसकी 32 वर्षीय आया की हत्या का दोषी ठहराया गया। इसके बाद कोर्ट ने उसको मौत की सजा सुना दी। घटना से जुड़ा वीडियो इंटरनेट पर वायरल हो रहा है, जिसमें देखा जा सकता है कि आरोपी जीलर अपने वकील केविन शर्ली को इशारा करके पास बुलाता है। केविन को लगता है वह उससे कुछ बात करने को बुला रहा है लेकिन जैसे ही वकील जीलर की बात सुनने को नीचे झुकता है तभी जीलर उस पर कोहनी से उसके मुंह पर वार करता है। हालांकि जीलर के हाथ हथकड़ी से बंधे थे और उसके आसपास दो पुलिसवाले भी थे लेकिन उसने फिर भी वकील पर हमला कर दिया। जैसे ही उसने हमला किया तभी पास खड़े पुलिस अधिकारियों ने उसे तुरंत जमीन पर गिरा दिया। इसके बाद, जज ने वकील से पूछा कि क्या वह ठीक है तो उसने शांति से जवाब दिया, मैं ठीक हूं। मैं बॉक्सिंग करता था, मैंने उससे कहीं बेहतर शॉट लिए हैं। वकील ने कहा कि मुझे नहीं पता था कि वह ऐसा कुछ करने जा रहा है।

नियम बदलने से साउथ कोरियाई लोगों की उम्र घटी

बच्चे के जन्म पर ही उम्र 1 साल मानी जाती थी, अब इंटरनेशनल सिस्टम लागू

सियोल।

साउथ कोरिया के नागरिकों की उम्र अब 1-2 साल कम हो गई है। यहां उम्र की गणना के लिए देश के ट्रेडिशनल सिस्टम को हटाकर इंटरनेशनल सिस्टम लागू कर दिया गया है। पिछले साल चुनाव के दौरान योल ने वादा किया था कि अगर वह राष्ट्रपति बनते हैं तो इस ट्रेडिशनल सिस्टम को खत्म करेंगे। दुनिया के अन्य देशों की तरह ही साउथ कोरिया के लोगों की उम्र की गणना इंटरनेशनल एज सिस्टम से की जाएगी। साउथ कोरिया की संसद में पिछले साल नए एज सिस्टम लागू करने के लिए बिल पारित हुआ था। ये अब कानून बन गया है। दरअसल, साउथ कोरिया में उम्र की गणना के लिए कोरियन एज का इस्तेमाल किया जाता है। यहां जब कोई बच्चा जन्म लेता है, तो उसी समय उसकी उम्र एक साल मानी जाती है। वहीं नया साल आने पर बच्चे की उम्र में एक साल और जुड़ जाता है यानी वह 2 साल का हो जाता है। आसान भाषा में समझें तो अगर किसी बच्चे का जन्म 31 दिसंबर को हुआ है तो उसकी उम्र 1 साल होगी। वहीं 1 जनवरी को वह बच्चा 2 साल का हो जाएगा। यानी कोरिया में 24 घंटे के अंदर ही उसकी उम्र 2 साल हो जाएगी। दक्षिण कोरिया की जनसंख्या 5.17 करोड़ है। सितंबर 2022 में सरकार ने एक सर्वे करवाया था, जिसमें 86प्रतिशत लोगों ने इंटरनेशनल एज सिस्टम अपनाने को लेकर मंजूरी दी थी। पिछले साल जनवरी में कोविड वैक्सीनेशन के समय ट्रैडीशनल सिस्टम को खत्म करने की मांग ने जोर पकड़ा था। इस दौरान हेल्थ अथॉरिटी ने कोविड वैक्सीनेशन के लिए जारी गाइडलाइन में इंटरनेशनल एज सिस्टम के साथ ही कोरियन एज सिस्टम को भी शामिल किया गया था। इससे उम्र को लेकर लोगों में काफी कंफ्यूजन की स्थिति पैदा हो गई थी। इसी वजह से राष्ट्रपति चुनाव में यह अहम मुद्दा बन गया था। ट्रेडिशनल एज सिस्टम की वजह से साउथ कोरिया के लोगों को विदेश जाने पर काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। साथ ही इंश्योरेंस और दूसरे सरकारी कामों में भी दिक्कतें आती हैं। नया एज सिस्टम लागू होने पर लोगों ने खुशी जताई है। राजधानी सियोल में काम करने वाले एक वर्कर ने रॉयटर्स से कहा- मैं इस साल 30 साल का होने वाला था लेकिन अब मैं 28 साल का हो गया हूं। मुझे इससे जीवन में बेहतर करने के लिए 2 साल और मिल गए हैं।

चीन-जापान में भी था ट्रेडिशनल सिस्टम

चीन, नॉर्थ और साउथ कोरिया, जापान और वियतनाम में ट्रेडिशनल तरीके से उम्र की गणना करने की परंपरा है। चीन के अलावा जापान ने 1950 और नॉर्थ कोरिया ने 1980 के दशक में उम्र गिनने के इस तरीके को खत्म कर इंटरनेशनल एज काउंटिंग सिस्टम को लागू कर दिया है। हालांकि, दक्षिण कोरिया और वियतनाम में अभी भी उम्र की गणना के लिए ये ट्रैडीशनल तरीका अपनाया जाता है।

साउथ कोरिया में उम्र गिनने के 3 तरीके

1962 से लीगल और एडमिनिस्ट्रेटिव कामों के लिए साउथ कोरिया इंटरनेशनल एज काउंटिंग सिस्टम का प्रयोग करता है। दूसरे तरीके के तहत जन्म लेने के समय बच्चे की उम्र जीरो मानी जाती है। हालांकि, नया साल यानी जनवरी आने पर वह बच्चा 1 साल का हो जाता है। इसे ऐसे समझ सकते हैं। यदि कोई बच्चा 1 दिसंबर 2021 को पैदा हुआ है तो वह 1 जनवरी 2022 को 1 साल का हो जाएगा। साउथ कोरिया की सेना में रिक्रूटमेंट, स्कूल में एडमिशन, शराब-धूम्रपान की लीगल एज और अपराधी पर कार्रवाई करने के लिए उम्र गिनने के इसी तरीके को फॉलो किया जाता है। तीसरा और सब पर लागू होने वाला तरीका है- पैदा होते ही बच्चा 1 साल का हो जाता है। उम्र गिनने के इस तरीके के तहत अगर बच्चा दिसंबर में पैदा हुआ है तो वह जनवरी में 2 साल का हो जाता है। फिर चाहे उसकी जन्मतिथि कुछ भी हो। दरअसल, साउथ कोरिया में बर्थ डेट की बजाय नए साल को ही उनका जन्मदिन माना जाता है।

रूसी सेना ने यूक्रेन के क्रामातोर्स्क शहर में मिसाइल से किया हमला, चार की मौत, कई घायल

कीव।

रूस की सेना ने मंगलवार को यूक्रेन के क्रामातोर्स्क शहर में हवाई हमला किया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, रूसी सेना ने मिसाइल से पूर्वी यूक्रेन के क्रामातोर्स्क शहर में एक भीड़-भाड़ वाले रेस्तरां को निशाना बनाया। इस हमले में चार लोग मारे गए और कई अन्य घायल हो गए। मृतकों में एक बच्चा भी शामिल है। हमले के फौरन बाद आपातकालीन सेवा घायलों की मदद के लिए घटनास्थल पर पहुंचीं। डोनेट्स्क क्षेत्र के सैन्य प्रशासन के प्रमुख पावलो किरिलेंको के अनुसार, मिसाइल हमला किया गया। उन्होंने कहा कि हम हमले में घायलों और मृतकों की सही संख्या का पता लगा रहे हैं। जिस रेस्तरां पर हमला किया गया वो शहर के केंद्र में स्थित है और वहां भारी भीड़ जमा होती है। अधिकारियों के हवाले से रिपोर्ट में दावा किया गया है कि रूसी सेना ने दूसरा मिसाइल हमला शहर के बाहरी इलाके में एक गांव पर किया। यूक्रेन के आंतरिक मामलों के मंत्री इहोर क्लिमेंको ने एक बयान में कहा कि रूस जानबूझकर भीड़-भाड़ वाले इलाकों को निशाना बना रहा है। इधर, अमेरिकी रक्षा विभाग ने यूक्रेन की महत्वपूर्ण सुरक्षा और रक्षा जरूरतों को पूरा करने के लिए 500 मिलियन अमेरिकी डॉलर के अतिरिक्त सुरक्षा सहायता पैकेज की घोषणा की है। सुरक्षा पैकेज में रूस के साथ चल रहे संघर्ष में यूक्रेन के जवाबी आक्रामक अभियानों में सहायता करने और हवाई सुरक्षा को मजबूत करने की महत्वपूर्ण क्षमताएं शामिल हैं। अमेरिकी रक्षा विभाग ने मंगलवार को एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा, रक्षा विभाग (डीओडी) ने यूक्रेन की महत्वपूर्ण सुरक्षा और रक्षा जरूरतों को पूरा करने के लिए अतिरिक्त सुरक्षा सहायता की घोषणा की। अमेरिका ने यूक्रेन को 500 मिलियन डॉलर की सुरक्षा सहायता राष्ट्रपति जो बाइडन द्वारा राष्ट्रपति जेलेंस्की के साथ टेलीफोन पर बातचीत के एक दिन बाद दी।

यूक्रेन की मदद करना जारी रखेगा अमेरिका

विज्ञप्ति में कहा गया, संयुक्त राज्य अमेरिका यूक्रेन को उसकी तत्काल युद्ध की जरूरतों और दीर्घकालिक सुरक्षा सहायता आवश्यकताओं को पूरा करना जारी रखेगा। सुरक्षा सहायता पैकेज में पैट्रियट वायु रक्षा प्रणालियों, स्टिंगर एंटी-एयरक्राफ्ट सिस्टम, हाई मोबिलिटी आर्टिलरी रॉकेट सिस्टम (एचआईएमएआरएस) के लिए अतिरिक्त गोला-बारूद, हाई-स्पीड एंटी-माइन क्लीयरिंग उपकरण शामिल हैं।

पाकिस्तान के सत्ताधारी नेताओं का आकलन, इमरान खान को निपटाया जा चुका है

इस्लामाबाद।

पाकिस्तान के सत्ताधारी गठबंधन के नेताओं की दुबई में हुई बैठक में आगे की रणनीति यह मान कर बनाई गई कि पाकिस्तान की सियासत में इमरान खान अब गुजरे समय की बात हो चुके हैं। इसके अलावा विभिन्न दलों के बीच चुनावी गठबंधन या सीटों के तालमेल की संभावना पर भी विचार किया गया। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री और पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज के सुप्रीमो नवाज शरीफ इस बैठक के लिए लंदन से दुबई आए। सत्ताधारी गठबंधन पाकिस्तान डेमोक्रेटिक मूवमेंट (पीडीएम) के घटक दलों के वरिष्ठ नेता भी राय-मशविरे के लिए वहां पहुंचे। एक खास रिपोर्ट में बताया है कि दुबई बैठक में शामिल नेताओं के बीच यह आम राय थी कि पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को अब सियासी तौर पर खत्म किया जा चुका है। लेकिन बैठक पर पाकिस्तान की जनता में बढ़ते असंतोष की चिंता पर हावी रही। वहां यह महसूस किया गया कि पाकिस्तान में अस्थिरता का खतरा अभी भी मौजूद है। बैठक में शामिल दलों से जुड़े सूत्रों ने बताया कि हालांकि सत्ताधारी गठबंधन इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के कमजोर होने जाने की बात से आश्वस्त है, लेकिन गठबंधन के नेताओं को इस बात का अहसास है कि पूर्व प्रधानमंत्री की लोकप्रियता बनी हुई है। पिछले साल अप्रैल में पीटीआई की सरकार गिराए जाने के बाद से इमरान खान की लोकप्रियता में तेजी से उछाल आया था। उसके बाद देश में हुए कुल 37 उप चुनावों में से 30 में पीटीआई विजयी रही। पाकिस्तान के अखबारों में दुबई बैठक को लेकर कई तरह के कयास लगाए गए हैं। एक विश्लेषण में कहा गया है कि गुजरे महीनों में पीडीएम के भीतर गहतफहमियां बढ़ी हैं। दुबई में नेताओं ने आपसी बातचीत से उन्हें दूर करने की कोशिश की।

वुहान का रिसर्चर बोला- कोरोना वायरस चीन का बायोवेपन: हमें लैब में 4 स्ट्रेन मिले; टेस्ट करना था, कौन-सा सबसे ज्यादा संक्रामक है

बीजिंग।

चीन ने बायोवेपन के तौर पर कोरोना वायरस को तैयार किया था। वुहान लैब में काम करने वाले एक रिसर्चर ने ये दावा किया है। इंटरनेशनल प्रेस एसोसिएशन में रिसर्चर चाओ शाओ ने कहा- मुझे और मेरे साथियों को टेस्टिंग के लिए वायरस के 4 स्ट्रेन्स दिए गए थे, जिससे ये पता चल सके कि कौन सा स्ट्रेन सबसे ज्यादा संक्रामक है। अब सामने आया है। रिसर्चर ने 26 मिनट की बातचीत में कई खुलासे किए। रिसर्चर ने बताया कि कैसे उनके एक साथी शान चाओ को कोरोना के स्ट्रेन्स पर टेस्टिंग करने के लिए कहा गया था। इस जांच का मकसद ये जानना था कि कौन सा स्ट्रेन सबसे जल्दी और सबसे प्रभावी तरह से इंफेक्शन फैला रहा है। साथ ही कौन सा स्ट्रेन इंसानों पर सबसे ज्यादा असरदार है।

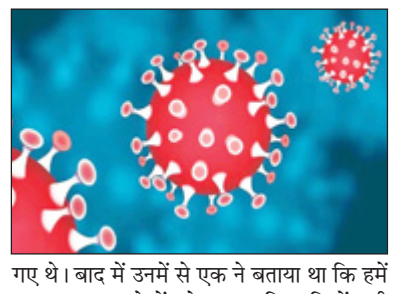

2019 के मिलिट्री वर्ल्ड गेम्स में वायरस फैलाने गए थे रिसर्चर्स

चाओ शाओ ने बताया, 2019 के मिलिट्री वर्ल्ड गेम्स के दौरान हमारे कुछ रिसर्चर्स साथी लापता हो गए थे। बाद में उनमें से एक ने बताया था कि हमें अलग-अलग देशों से आए खिलाड़ियों की हाइजीन कंडीशन्स चेक करने के लिए होटल भेजा गया था। खिलाड़ियों के हेल्थ चेक-अप के लिए वायरोलॉजिस्ट की जरूरत नहीं होती है। दरअसल, इन लोगों का असली टारगेट कोरोना फैलाना था। ऐसा ही एक और मामला साथी शान चाओ का था। उसे शिनजियांग के री-एजुकेशन कैंप में रह रहे उइगर लोगों के हेल्थ चेक-अप के लिए भेजा गया था। शान चाओ ने अप्रैल 2020 में कोरोना स्ट्रेन पर रिसर्च पर काम किया था। शाओ ने आशंका जताई कि चाओ को असल में या तो कोरोना फैलाने या फिर इंसानों पर ये कैसे रिएक्ट करता है, ये देखने के लिए भेजा गया था।

अमेरिकी रिपोर्ट का दावा- वुहान से ही लीक हुआ था कोरोना

कुछ दिन पहले ही एक अमेरिकी रिपोर्ट में दावा किया गया था कि कोरोना वायरस चीन की वुहान लैब से ही लीक हुआ था और बाद में इसने पूरी दुनिया को चपेट में ले लिया। रिपोर्ट के मुताबिक वुहान लैब के तीन वैज्ञानिक सबसे पहले कोरोना इन्फेक्शन का शिकार हुए थे। ये 3 वैज्ञानिक बेन हू, यू पिंग और यान झू थे। तीनों इस लैब के लीड रिसर्चर्स थे। इतना ही नहीं, रिपोर्ट में ये भी दावा किया गया था कि चीन की इस हरकत के तमाम सबूत अमेरिकी खुफिया एजेंसी के पास मौजूद हैं। दिसंबर 2019 में कोरोना का पहला केस चीन के वुहान में सामने आया था। चीन से ही कोरोना धीरे-धीरे पूरी दुनिया में फैला। कई रिपोर्ट्स में ये दावा किया जा चुका है कि कोरोना वायरस चीन के वुहान स्थित वुहान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी यानी उसके एक लैब से लीक हुआ था।

चीन से कोई मिलिट्री एग्रीमेंट नहीं करेगा श्रीलंका

प्रेसिडेंट बोले- हमारे देश का इस्तेमाल भारत के खिलाफ नहीं होने देंगे; जल्द सुधरेगी इकोनॉमी

कोलंबो।

श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे ने कहा है कि उनके देश का इस्तेमाल कभी भारत के खिलाफ नहीं किया जा सकेगा। ब्रिटेन और फ्रांस के दौरे पर रवाना होने से पहले रानिल ने कहा- इस बात में किसी को कोई शक नहीं होना चाहिए कि हम चीन से कभी मिलिट्री एग्रीमेंट नहीं करेंगे। विक्रमसिंघे ने कहा- चीन और श्रीलंका के रिश्ते मजबूत हैं, लेकिन हम ये भी साफ कर देना चाहते हैं कि हमारे देश में चीन का कोई मिलिट्री बेस नहीं हैं और न होगा। कोई भी देश श्रीलंका का इस्तेमाल भारत के खिलाफ नहीं कर सकेगा। हम देश की इकोनॉमी को भी जल्द पटरी पर ले आएंगे।

श्रीलंका न्यूट्रल कंट्री

फ्रांस के मीडिया हाउस में रानिल से ज्यादातर सवाल चीन और श्रीलंका पर ही किए गए। एक सवाल के जवाब में रानिल ने कहा- श्रीलंका न्यूट्रल कंट्री है और हमने चीन के साथ कोई मिलिट्री एग्रीमेंट नहीं किया है। ऐसा करने का कोई प्लान भी नहीं है। भारत के बारे में पूछे गए सवाल पर श्रीलंकाई राष्ट्रपति ने कहा- हमने भारत को कई बार भरोसा दिलाया है और इस बात को मैं दोहरा रहा हूं कि हमारे देश से भारत के खिलाफ कोई खतरा पैदा नहीं होने दिया जाएगा। कोई भी देश श्रीलंका को बेस के तौर पर इस्तेमाल नहीं कर सकेगा। चीन से जुड़े एक सवाल पर रानिल ने कहा- चीन हमारे देश में 1500 साल से है, लेकिन उसका कोई मिलिट्री बेस यहां नहीं है। ऐसा होगा भी नहीं। ये सही है कि हम्बनटोटा पोर्ट चीन के पास 99 साल की लीज पर है, लेकिन ये भी याद रखें कि इसकी सिक्योरिटी हमारी फौज के पास है। इसका इस्तेमाल सिर्फ कारोबार के लिए किया जा सकता है। एक सवाल के जवाब में रानिल ने कहा- हम मुश्किल दौर से गुजरे हैं और अब हालात काफी बेहतर हुए हैं। भारत समेत कई देशों ने हमारी मदद की है। मुझे पूरी उम्मीद है कि श्रीलंका की इकोनॉमी बहुत जल्द पटरी पर लौट आएगी।

श्रीलंका आया था चीन का जासूसी जहाज

पिछले साल चीन का स्पाई शिप युआन वांग-5 श्रीलंका के हम्बनटोटा पोर्ट पहुंचा था। तब इससे भारतीय नौसेना और इसरो की जासूसी का खतरा बढ़ गया था। हालांकि, तब भारत ने भी जवाबी तैयारियां कर लीं थीं। चीन का यह स्पाई शिप करीब 750 किमी दूर तक आसानी से निगरानी कर सकता है। हम्बनटोटा पोर्ट से तमिलनाडु के कन्याकुमारी की दूरी करीब 451 किलोमीटर है। जासूसी के खतरे को देखते हुए ही भारत ने श्रीलंका से इस शिप को हम्बनटोटा में एंट्री न देने को कहा था। युआन वांग-5 को स्पेस और सैटेलाइट ट्रैकिंग में महारत हासिल है। चीन युआन वांग क्लास शिप के जरिए सैटेलाइट, रॉकेट और इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल की लॉन्चिंग को ट्रैक करता है। अमेरिकी रक्षा विभाग की रिपोर्ट के मुताबिक- इस शिप को स्ट्रैटजिक सपोर्ट फोर्स ऑपरेट करती है। थिएटर कमांड लेवल का आर्गेनाइजेशन है। साइबर, इलेक्ट्रॉनिक, इंफॉर्मेशन, कम्युनिकेशन और साइकोलॉजिकल वारफेयर मिशन में मदद करती है। इससे पहले चीन ने 2022 में जब लॉन्ग मार्च 5बी रॉकेट लॉन्च किया था, तब यह शिप निगरानी मिशन पर निकला था। हाल ही में यह चीन के तियांगोंग अंतरिक्ष स्टेशन के पहले लैब मॉड्यूल की लॉन्चिंग की समुद्री निगरानी में भी शामिल था।

श्रीलंका ने कर्ज न चुका पाने के बाद 2017 में साउथ में स्थित हम्बनटोटा पोर्ट को 99 साल की लीज पर चीन को सौंप दिया था। ये पोर्ट एशिया से यूरोप के बीच मुख्य समुद्री व्यापार मार्ग के पास स्थित है। जो चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव प्रोजेक्ट के लिए काफी महत्वपूर्ण है। भारत और अमेरिका ने हमेशा ये चिंता जाहिर की है कि 1.5 अरब डॉलर की लागत से तैयार हुआ ये बंदरगाह चीन का नौसेना बेस बन सकता है। भारत के सिक्योरिटी एक्सपर्ट ने कई बार इसकी इकोनॉमिक फिजिबिलिटी पर सवाल उठाया है। साथ ही कहा है कि यह चीन की स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स स्ट्रैटजी में सही बैठता है। इसके तहत चीन जमीन के साथ ही समुद्र से भी हिंद महासागर के जरिए भारत को घेर सकता है। यह पोर्ट पूर्व राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे के शहर में है। 2008 में इसका कंस्ट्रक्शन शुरू हुआ था, लेकिन ज्यादा लागत की वजह से श्रीलंका कर्ज में डूबता गया। कर्ज न चुका पाने के बाद साल 2017 में साउथ में स्थित हंबनटोटा पोर्ट को 99 साल की लीज पर चीन को सौंप दिया था।

भारत के अहसानमंद

फरवरी में रायसीना हिल्स डायलॉग में हिस्सा लेने आए श्रीलंका के विदेश मंत्री अली साब्रे ने कहा था- मुश्किल वक्त में भारत ने हमारे देश की सबसे ज्यादा मदद की और इसके लिए श्रीलंका हमेशा भारत का शुक्रगुजार और अहसानमंद रहेगा।